Volume-11, No. 2 Aug.-2024, pp. Hin.33-37

हिन्दी साहित्य का राजस्थानी जैन गद्यः 20वीं सदी

डॉ० नेम चंद जैन, एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, श्री कुंदकुंद जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
खतौली, जिला मुजफ्फरनगर, उ0प्र0, भारत।

सार

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने एक बार लिखा था कि ''जैन धर्मावलंबियों में सैकड़ों साधु महात्माओं और हजारों विद्वानों ने ग्रंथ रचना की है। ये ग्रंथ केवल जैन धर्म से ही संबंध नहीं रखते इनमें तत्वचिंतन, काव्य, नाटक, छंद, अलंकार, कथा–कहानी व इतिहास से संबंध रखने वाले ग्रंथ हैं; जिनके उद्धार से जैनेतर जनों की भी ज्ञानवृद्धि और मनोरंजन हो सकता है।''[1]

प्रस्तुत शोध–पत्र की तो सीमा मात्र जैन गद्य, वह भी मात्र 20 वीं सदी के राजस्थान का है; अन्यथा, आप चाहेंगे तो पाएँगे कि जैन साहित्य ने प्रत्येक युग व क्षेत्र की बदलती करवट में अपनी जीवन्तता व समन्वयवादी दृष्टि का परिचय दिया है। इस संबंध में डॉ० नरेंद्र भानावत का कथन दृष्टव्य है ''जैन साहित्य भी अपने युग के घटनाचक्र से प्रेरित–प्रभावित रहा है और चूंकि संतों का संबंध उच्च वर्ग से लेकर सामान्य वर्ग तक बराबर बना रहता है, इस कारण यह साहित्य केवल आभिजात्य वर्ग की मनोवृत्ति का चितेरा–मात्र बनकर नहीं रह गया है, इसमें सामान्य जन की आशा–आकांक्षा और लोक जीवन की चित्तवृत्तियाँ यथार्थ रूप से चित्रित हुई हैं।''[2]

मुख्य शब्द–

जैन साहित्य अपने कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से वैविध्ययुक्त है। इसने काव्य रूपों में जो बंधी–बंधाई परिपाटियाँ थीं उन्हें तोड़–छोड़कर लोक एवं शास्त्र की नवीन भावभूमि पर सहजता, व्यापकता व मौलिकता का समावेश किया। पद्य को शताधिक काव्य रूप देकर गद्य में भी अनेक नवीन रूपों की सृष्टि की।[3]

कारण, कि यह पत्र भाषा विषयक है, अतः इस संदर्भ में 'राजस्थान का जैन साहित्य' नामक पुस्तक की भूमिका में डॉ० नरेंद्र भानावत का जैन साहित्य को समस्त भारतीय भाषाओं के विकासात्मक अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण बताने वाला यह कथन भी ध्यातव्य है ''जैन साहित्य का भाषा शास्त्र के विकासात्मक अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्व है भाषा की सहजता और लोकभूमि की पकड़ के कारण इस साहित्य में जनपदीय भाषाओं के मूल रूप सुरक्षित हैं इनके आधार पर भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास और पारस्परिक सांस्कृतिक एकता के सूत्र आसानी से पकड़े जा सकते हैं।''[4]

राजस्थान का जैन साहित्य

यह सच है कि राजस्थान का साहित्य संस्कृति कला व धर्म भावना से प्रभावित रहा; परंतु यह वृत्ति संकीर्ण मनोवृत्ति की द्योतक नहीं है; नैतिक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक होने से इस व्यक्ति का संबंध मानव के अस्तित्व से है। यही वृत्ति जब सृजनात्मक स्तर पर रसमय बनकर मानव के अंतर्पटल को छूती है, तब साहित्य और कला की सृष्टि होती है। और इस स्तर पर आकर मानव मूल्यों और कलात्मक मूल्यों में विशेष अंतर नहीं रह जाता।

राजस्थान का जितना भी जैन साहित्य अभी तक प्रकाश में आया है, उसका भी बहुभाग अभी ग्रंथागारों, मंदिरों आदि में बंद है। अनेक आचार्यों व साहित्य साधकों ने अपने–अपने प्रभाव क्षेत्र के लोगों के स्वभाव व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विविध साहित्य की रचना की। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी और हिंदी सभी भाषाओं में विपुल परिमाण में यह साहित्य रचा गया, जिसके प्रमाण हिंदी के आदिकाल से ही मिलते हैं।

20 वीं सदी का राजस्थान का जैन गद्य साहित्य

यह समय विश्व के प्रत्येक स्तर पर बदलाव का रहा, जिससे राजस्थान व यहाँ का जैन साहित्य भी अछूता नहीं रहा। इस काल को अनेक विद्वानों ने गद्यकाल भी कहा; जिसके समर्थक प्रमाण राजस्थान के जैन गद्य साहित्य में भी मिलते हैं। अब यहाँ भी युग साहित्य की नई विधाएँ– नाटक, उपन्यास, कहानी, जीवनी, निबंध, संस्मरण, यात्रा, शोध–समीक्षा आदि ग्रंथ रचना की माध्यम बनीं।

नाट्य रूप

इस विधा में मात्रात्मक दृष्टि से अधिक जैन साहित्य न लिखा जाकर भी यह अपने विविध परन्तु नवीन प्रयोगों के कारण विशेष महत्व रखता है। जैन परंपरा में विभिन्न आयोजनों पर नाट्य–प्रदर्शन की लंबी परंपरा रही है, जिनका प्राचीन रूप 'रासो' में देखा जा सकता है, जो कि नृत्य, संगीत, अभिनय प्रधान ही होते थे। डॉ० नरेंद्र भानावत इस विधा में अधिक रचना न होने के पीछे वीतरागी पात्रों को मंच पर उपस्थित न करना मानते हैं।[5] इस विधा के प्रमाण में श्री महेंद्र जैन द्वारा रचित 'महासती चंदनबाला' नाटक, जिसे दिल्ली व जयपुर में रंगमंच पर सफलतापूर्वक खेला जा चुका, महत्वपूर्ण रचना है। इसके विषय में श्री महावीर कोटिया लिखते हैं ''रंगमंचीय नाट्य की दृष्टि से लेखक ने इस प्रसिद्ध कथानक का सहज निर्वाह किया है, दृश्य परिवर्तन यथासंभव कम है तथा पात्र भी सीमित हैं।''[6]

एकांकी नाटक अनेक लिखे गए; जिनमें से डॉ० नरेन्द्र भानावत की श्जिण से अमृत की ओर कृति सांस्कृतिक मूल्यों व युगीन संदर्भों के प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसमें 9 एकांकी संकलित हैं, जिनके संबंध में डॉ० रामचरण महेंद्र लिखते हैं ''लेखक ने इन एकांकियों के माध्यम से कर्ममूलक संस्कृति की प्रतिष्ठा, पुरुषार्थवाद की मान्यता और कर्तव्य की भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि इन एकांकियों की कथावस्तु और पृष्ठभूमि जैन कथाओं से संबंधित है, तथापि भानावत जी देश की आधुनिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों से भी अपना मुख नहीं मोड़ सके। देश की वर्तमान परिस्थितियाँ इनमें झलकी हैं।''[7]

इसी क्रम में चंदनमल 'चाँद' की 'कंचन और कसौटी' रचना भी लोकजीवन पर आधारित होकर प्रभावित बन पड़ी है। इसमें 11 एकांकियाँ संकलित हैं। लोकनाट्य शैली पर आधारित 'पड़' परंपरा में भीलवाड़ा के श्री निहालचंद अजमेरा की प्रस्तुति 'महावीर स्वामी का पड़' उल्लेखनीय है, जिसमें भगवान महावीर की जीवन गाथा को प्रभावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया है। प्रदर्शन में 'पड़' को मंच पर दर्शकों के सम्मुख लगाकर दो व्यक्तियों द्वारा नाटकीय प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसी प्रकार कठपुतली नाट्य रचना के विशिष्ट प्रमाण स्वरूप भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर के संचालक श्री देवीलाल सांभर की मौलिक देन 'वैशाली का अभिषेक' दर्शनीय है। इसकी प्रस्तुति में अंधेरा करके विशेष रंग फ्लोरोसेंट व विशिष्ठ रोशनी अल्ट्रावायलेट में पुतलियों को मंच पर प्रदर्शित किया जाता है।

उपन्यास

इस विधा में प्रथम हिंदी अनुवाद के रूप में प्राकृत रचना 'तरंगवई' का 'तरंगवती' नाम से श्री ज्ञान भारिल्ल ने किया। इन्हीं की मौलिक रचनाएँ हैं 'शूली और सिंहासन', 'भटकते–भटकते' तथा अमित कुमार की 'कपिल' डॉ० प्रेम सुमन जैन की 'चितेरों के महावीर'; कमला जैन 'जीजी' की 'अग्निपथ' तथा लघु उपन्यासों में श्री महावीर कोटिया की 'आत्मजई', 'कुणिक' भी रचनाएँ सशक्त हैं। इनकी विशिष्टता के बारे में डॉ० भानावत लिखते हैं– ''इन उपन्यासकारों की मौलिकता कथा में निहित ना होकर उसके प्रस्तुतिकरण और सामाजिक जीवन संदर्भों के सन्निवेश में है। प्रवाहपूर्ण भाषा, वर्णन कौशल, चित्रोपम क्षमता, संवाद योजना, नूतन शैली और नए रचना–तंत्र के कारण ये उपन्यास रोचक और मार्मिक बन पड़े हैं।'' इसी क्रम में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करता सरल भाषा शैली में प्रस्तुत डॉ० हुकुमचंद भारिल्ल का 'सत्य की खोज' भी पठनीय है।

इसी विद्या की एक धारा चरिताख्यान में परिवर्तन लाकर उन्हें समसामयिक जीवन प्रसंग और समस्याओं से जोड़कर अधिक रोचक, प्रेरक व मार्मिक रूप से प्रस्तुत करने वालों में श्री जवाहर लाल जी म० सा०, जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म० सा० द्वारा लिखित चरिताख्यान पठनीय हैं।

कहानी

राजस्थान के आधुनिक जैन कहानीकारों ने विशाल कथानिधि को मूल आधार बनाकर उसके शिल्प में परिवर्तन करके उसे आधुनिक कहानी का ढंग प्रदान किया। इसके साथ ही काल्पनिक घटनाओं को जीवन का यथार्थ धरातल और बौद्धिक–मनोवैज्ञानिक आधार दिया। उनकी

घटनाओं को चरित्र विश्लेषण और मानसिक द्वंद्व से संपृक्त करके उनके दैववाद, अविश्वसनीयता के स्थान पर स्वाभाविकता, यथार्थवादिता, विचारात्मकता, पुरुषार्थवाद, कार्य–कारण श्रृंखला पर अधिक बल प्रदान किया। ऐसी कहानियों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं– श्री महावीर कोटिया की 'बदलते क्षण', श्री शांति चंद्र मेहता की 'सौंदर्य दर्शन' डॉ० नरेंद्र भानावत की 'कुछ मणियाँ कुछ पत्थर', डॉ० हुकुमचंद भारिल्ल की 'आप कुछ भी कहो', श्री केसरी चंद सेठिया की 'मुक्ति के पथ पर' कहानी संग्रह।

इसके अतिरिक्त लघु कथाओं, प्रेरक प्रसंग व गद्य काव्य के रूप में भी विपुल कथा साहित्य का निर्माण हुआ। इसमें श्वेतांबर जैन साधुओं का विशेष योगदान रहा; जिनमें कुछ महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं– श्री देवेंद्र मुनि (प्रतिध्वनि), श्री गणेश मुनि (प्रेरणा के बिंदु), मुनि श्री छात्रमल (कथा कल्पतरु), श्री चंद्रमुनि (अंतर्ध्वनि), साध्वी राजमती (पथ और पथिक), श्री मधुकर मुनि आदि।

जीवनी

जैन परंपरा की गुर्वावली, पट्टावली, धर्माचार्यों–मुनियों के जीवन प्रसंग, ग्रन्थों–पांडुलिपियों में प्रशस्तिपरक गुरु परंपरा द्वारा जीवनी लेखन पुराने समय से होता रहा है। परंतु आधुनिक युग की व्यवस्थित जीवनी लेखन शैली को अपनाकर जीवनी लिखने वाले जैन विद्वानों की भी लंबी श्रृंखला है। इनमें राजस्थान में ज्यादातर लेखकों ने अपने यायावरी जीवन में अपनी जीवनचर्या, उपदेशों–संदेशों, क्रियाकलापों से सामाजिक जीवन का चरित्रोन्नयन करने वाले जैन साधुओं की जीवनियाँ लिखी हैं। उदाहरण स्वरूप– पंडित शोभाचंद्र व डॉ० इंद्रचंद्र शास्त्री कृत 'पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की जीवनी', मुनि श्री बुधमलजी कृत 'आचार्य तुलसी का जीवन दर्शन' आदि अनेक रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं।

निबन्ध

जैन साहित्यकारों ने निबंध साहित्य के क्षेत्र में अधिकांशतः विचारात्मक, वर्णन–विवरणात्मक निबंध लिखकर तथा पत्र–पत्रिकाओं में लेखों के माध्यम से पर्याप्त योगदान दिया। इनमें अनेक भाषाओं के साथ हिंदी के विद्वान पंडित चौनसुखदासजी के 'विश्वामित्र', 'कल्याण', 'अनेकांत', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' आदि पत्रों में प्रकाशित लेखों व 'वीरवाणी' के संपादकीयों, टिप्पणियों, लेखों के आदर्श रूप दृष्टव्य हैं, जैसे– ''क्षमा हमें विवेक देती है और प्रत्येक विषय पर गहराई से विचार करने का अवकाश प्रदान करती है। क्षमा को ठीक से समझने के लिए हमें उसके दो भेद करने होंगे एक साधु की, दूसरी गृहस्थ की।'' पं० इंद्रलाल शास्त्री ने 'जैन हितेच्छु', 'अहिंसा' पत्रों के व पं० भंवरलाल न्यायतीर्थ ने 'वीरवाणी', 'जैन बंधु', 'जैन हितेच्छु' के संपादकीय लेखों के माध्यम से गद्य की श्रीवृद्धि की। डॉ० हुकुमचंद भारिल्ल ने 'धर्म के दश लक्षण', 'अहिंसाः महावीर की दृष्टि में', 'शाकाहार', 'अनेकांत और स्याद्वाद' आदि अनेक कृतियों के माध्यम से विवेचनात्मक निबंध लिखे। पं० मिलापचंद रतनलाल कटारिया के अनेक शोधपूर्ण निबंधों का संकलन 'जैन निबंध रत्नावली' में देखा जा सकता है। इसी क्रम में डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल के भी 350 से अधिक खोजपूर्ण निबंधात्मक लेख देश की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्हीं के साथ श्री भंवरलाल पोल्याका, पं० बंशीधर शास्त्री, श्रीमती सुदर्शन छाबड़ा आदि अनेक निबंधकार पत्र–पत्रिकाओं में व स्वतंत्र लेखन से निबंधनिधि की श्रीवृद्धि कर चुके हैं। कतिपय निम्न विचार प्रधान निबंध लेखक भी इस विधा की विशिष्ट धरोहर हैं– आ० तुलसी कृत 'मेरा धर्म रू केंद्र और परिधि', 'क्या धर्म बुद्धिगम्य है', 'धर्म एक कसौटी एक रेखा'; मुनि नथमल कृत–'तट दो प्रवाह एक', 'समस्याओं का पत्थर अध्यात्म की छेनी', 'महावीर क्या थे' आदि।

शोध समालोचना

अब यह सिद्ध हो चुका है कि हिंदी साहित्य की आदिकालीन अधिकांश प्रामाणिक सामग्री जैन साहित्यकारों द्वारा रचित है तथा परवर्ती संत काव्य, प्रेम व भक्ति काव्य के रचना तंत्र और शिल्प विधान पर उसका प्रभाव है। परंतु अधिकांश भाग उसका आज भी सैकड़ों मंदिरों, स्थानकों में पांडुलिपियों के रूप में बंद है। और इसका संबंध केवल धर्म से ही नहीं बल्कि उसमें साहित्य, इतिहास, दर्शन, भूगोल, आयुर्वेद, ज्योतिष की अलभ्य सामग्री निबद्ध है।

भगवान महावीर के 2500 वें परिनिर्वाण वर्षोपलक्ष्य में सरकारी सहयोग से जयपुर, उदयपुर विश्वविद्यालयों ने जैन अनुशीलन केंद्रों की स्थापना तथा सामाजिक स्तर पर श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित महावीर भवन, जयपुरय आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भंडार शोध प्रतिष्ठान, लाल भवन, जयपुर जैन इतिहास समिति, जयपुरय जैन विश्व भारती,

लाडनूं; अभय जैन ग्रंथमाला, बीकानेर आदि द्वारा भी अनेक शोध कार्य कराए जा चुके व निरंतर जारी हैं।

यात्रा वर्णन

अनेक जैन विद्वानों व साधुओं ने अपनी यात्राओं के वर्णन द्वारा अपने संपर्क में आए स्थानों की संस्कृति, स्थानीय लोगों की मनोवृत्ति, प्राकृतिक चित्रण व घटनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण आधुनिक गद्य शैली में करके हिंदी भाषा की श्रीवृद्धि की हैय जैसे– 'नव निर्माण की पुकार' में सत्यदेव विद्यालंकार ने, 'कुछ देखा कुछ सुना कुछ समझा' में मुनि नथमल ने, 'पद चिह्न' में मुनि श्रीचंद्र ने, 'जन–जन के बीच' में मुनि सुखलाल ने अपनी यात्राओं के वर्णन के साथ–साथ प्रसंगोचित विचार देकर इन्हें रोचक व ग्राह्य बना दिया।

संस्मरण–

इनमें जैन साधुओं ने अपने गुरुओं अथवा साधार्मियों के संपर्क से बनने वाले अनुभवों अथवा उन्हीं के संस्मरणों का संकलन करके पाठकों के जीवन को शिक्षित वह आनंदमय करने का प्रयास कियाय उदाहरण स्वरूप– 'रश्मियाँ'– मुनि श्रीचंद्र, 'आचार्य श्री तुलसी अपनी छाया में'– मुनि सुखलाल, 'जय सौरभ'–मुनि छत्रमल तथा इन्हीं की 'महावीर की सूक्तियाँः मेरी अनुभूतियाँ', 'बुद्ध की सूक्तियाँः मेरी अनुभूतियाँ' आदि।

योग साहित्य

इसमें योगासन, प्राणायाम आदि द्वारा आहार, शरीर–शुद्धि आदि तथा ध्यान–साधना आदि द्वारा किस प्रकार अपनी शक्तियों को प्रगटाया जा सकता है, इसका वर्तमान में प्रचलित साधना पद्धतियों के परिप्रेक्ष्य में जैन दर्शन की दृष्टि को सरल हिंदी में प्रस्तुत किया है। इनके उदाहरण हैं– मुनि नथमल कृत 'तुम अनंत शक्ति के स्रोत हो', 'मैं, मेरा मन, मेरी शांति', 'चेतना का उर्ध्वारोहण', 'भगवान महावीर की साधना का रहस्य', 'अस्तित्व का बोध', तथा साध्वी राजमती कृत 'योग की प्रथम किरण', व आचार्य तुलसी कृत 'मनोनुशासनम' आदि।

इतिहास साहित्य

मुनि बुद्धमल कृत 'तेरापंथ का इतिहास', मुनि छात्रमल कृत 'इतिहास के बोलते पृष्ठ', मुनि धनराज कृत 'चमकते चाँद' आदि रचनाओं में प्रागैतिहास से लेकर ऐतिहासिक काल, फिर नवाचार्यों तक जैन धर्म की स्थिति जैनाचार्यों का जीवन, संतों सतियों की ख्यात, संप्रदाय परंपरा, आंतरिक व्यवस्था, अनुशासन, विकास क्रम, युगानुकूल परिवर्तन आदि देकर युग प्रवृत्तियों का परिचय दिया गया।

भाषा साहित्य

मुनि बुद्धमल कृत 'भारतीय भाषाओं को जैन साहित्यकारों की देन', मुनि नथमल कृत 'हिंदी जन जन की भाषा', पुस्तकों में पहली में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, गुजराती, कन्नड़, तमिल आदि भाषाओं के समस्त वाङ्मय का ब्यौरा, उन पर जैन प्रभाव का परिचय तथा दूसरी में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने के लिए तर्क प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रवचन साहित्य–

20वीं शताब्दी के जैन संतों व गृहस्थ विद्वानों ने प्राचीन धर्म ग्रंथो को नवीन अर्थबोध देकर समाज व राष्ट्रोद्धारक प्रवृत्तियों को उजागर किया। इसलिए आपकी वाणी कुरीतियों को मिटाकर रचनात्मक समर्थक होकर नवजागरण की पोशक रही। ऐसे महान पुरुषों में उल्लेखनीय हैं आचार्य जवाहर लाल जी महाराज, श्री चौथमल जी महाराज, आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज, आचार्य श्री नाना लाल जी महाराज, आचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज आदि की अपार प्रवचन श्रृंखला परक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। आपकी भाषा व भावना का एक उद्धरण दृष्टव्य है– ''जैन दर्शन में ना तो व्यक्ति पूजा को महत्व दिया गया है ना ही संकुचित घेरों में सिद्धांतों को कसने की कोशिश की गई है। आत्म विकास के संदेश को न सिर्फ समूचे विश्व को बल्कि समूचे जीव जगत को सुनाया गया है। जैन शब्द का मूल भी इसी भावना की नींव पर अंकुरित हुआ है।''[8]

इस प्रकार इस शोध पत्र में हमने पाया कि 20वीं शताब्दी के राजस्थानी जैन गद्य साहित्यकारों ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए उन सभी गद्य विधाओं का उपयोग किया जो इस दौर की सामान्य हिंदी साहित्य की गद्य विधाएँ थीं।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक जैन कवि, संपादक रमा जैन, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्रकाशन वर्ष 1947 में उद्धृत, पेज नंबर–1
2. राजस्थान का जैन साहित्य, संपादक मंडल– अगरचंद नाहटा, डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल, डॉ० नरेंद्र भानावत, डॉ० मूलचंद सेठिया, महोपाध्याय विनयसागर, प्रकाशक, कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर, प्रकाशन वर्ष (पुनः) 2003 की भूमिका, पेज नंबर–14

3. वही, पेज नंबर–19
4. वही, पेज नंबर–16
5. वही, 'हिंदी जैन साहित्य की प्रवृत्तियाँ', लेख, पेज नंबर–260
6. वही, 'जैन कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ', लेख, पेज नंबर–367
7. वही, वही, पेज नंबर–366– 67 पर उद्धृत
8. 'जैन संस्कृति के राजमार्ग', आचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज, पेज नंबर– 9